

रुद्राष्टकम्

नमामीश मीशान नरिवाणरूपं, वधिं व्यापकं ब्रह्मा वेदसवरूपं
नजिं नरिगुणं नरिवकिल्पं नरीहं, चदिाकाशा माकाशवासं भजेहं
नरिकाार मों कारमूलं तुरीयं, गरिा ग्याान गोतीत मीशं गरिीशं
करालं महाकाल कालं कृपालं, गुणागार संसार पारं नतोहं
तुषारादरसिकाश गौरं गम्भीरं, मनोभूत कोटिप्रभा शरी शरीरं
स्फूरणमौलिकिल्लोलिनी चारू गंगा, लसद् भाल बालेन्दु कंठे भुजंगा
चलत्कुंडलं भ्रू सुनेतरं वशिलं, प्रसन्नानं नीलकंठं दयालं
मृगधीश चरमाम्बरं मुण्डमालं, प्रयिं शंकरं सर्वनाथं भजामि
प्रचंडं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं, अखण्डं अजं भानुकोटिप्रकाशं
त्रयः शूलं नरिमूलन शूलपाणि, भजेहं भवानीपति भावगम्यं
कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी, सदा सज्जदानन्दाता पुरारी
चदिानंद संदोह मोहापहारी, प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी
न यावद् उमानाथ पादारवन्दिं, भजंतीह लोके परेवा नराणां
न तावत्सुखं शान्तसिन्तापनाशं, प्रसीद प्रभो सर्वभूता धवासं
न जानमयोगं जपं नैव पूजां, नतोहं सदा सर्वदा शंभु तुभयं
जरा जन्म दुःखौद्द तातप्यमानं, प्रभो पाह्मिआपन्नमामीश शंभो

रुद्राष्टकमदिं प्रोक्तं वपिरेण हरतोषये
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भु प्रसीदति